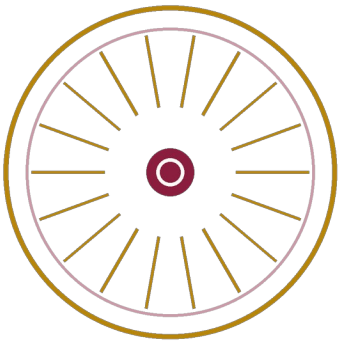

# अध्याय 15: पुरुषोत्तमयोग

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **15.01**

श्रीभगवानुवाच |

ऊर्ध्वमूलमधःशाखमश्वत्थं प्राहुरव्ययम् |

छन्दांसि यस्य पर्णानि यस्तं वेद स वेदवित् || **01** ||

हिन्दी अनुवाद:

श्रीभगवान बोले—आदिपुरुष परमात्मा रूपी मूल (जड़) वाले और ब्रह्मा रूपी मुख्य शाखा वाले इस संसार रूपी पीपल के वृक्ष को अविनाशी कहते हैं, जिसके वेद पत्ते कहे गए हैं; उस संसार रूपी वृक्ष को जो तत्व से जानता है, वही वेद के तात्पर्य को जानने वाला है।

सरल व्याख्या:

भगवान संसार की तुलना एक उलटे पीपल के पेड़ से करते हैं, जिसकी जड़ें ऊपर (परमात्मा में) हैं और शाखाएँ नीचे (संसार में) फैली हैं। इसका अर्थ यह है कि इस जगत् का मूल स्रोत परमात्मा है। जब तक मनुष्य इस पेड़ के पत्तों (भोगों) में उलझा रहता है, वह सत्य को नहीं जान पाता। जो इसके मूल स्रोत को पहचान लेता है, वही वास्तविक ज्ञानी है।

यह श्लोक हमें बताता है कि... यह दृश्य संसार केवल शाखाओं की तरह है; इसका वास्तविक आधार और स्रोत ऊपर स्थित परम चेतना ही है।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **15.02**

अधश्चोर्ध्वं प्रसृतास्तस्य शाखा गुणप्रवृद्धा विषयप्रवालाः |

अधश्च मूलान्यनुसन्ततानि कर्मानुबन्धीनि मनुष्यलोके || **02** ||

हिन्दी अनुवाद:

उस संसार वृक्ष की तीनों गुणों द्वारा बढ़ी हुई और विषय-भोग रूपी कोपलों वाली शाखाएँ नीचे और ऊपर फैली हुई हैं; तथा मनुष्य लोक में कर्मों के अनुसार बाँधने वाली जड़ें भी नीचे (अनुबंध रूप में) फैली हुई हैं।

सरल व्याख्या:

प्रकृति के तीन गुण ही इस संसार रूपी वृक्ष को सींचते और बड़ा करते हैं। हमारी इन्द्रियों के भोग इस पेड़ की कोपलें हैं। मनुष्य की जो कामनाएँ और वासनाएँ हैं, वे सूक्ष्म जड़ों की तरह हैं जो इंसान को कर्मों के बंधन में बाँधकर इस संसार में बार-बार जन्म लेने पर मजबूर करती हैं।

यह श्लोक हमें बताता है कि... हमारी कामनाएं और आसक्तियां ही वे सूक्ष्म जड़ें हैं जो हमें संसार चक्र में बांधकर रखती हैं।

श्लोक संख्या: **15.03**

> न रूपमस्येह तथोपलभ्यते नान्तो न चादिर्न च सम्प्रतिष्ठा |
> अश्वत्थमेनं सुविरूढमूल मसङ्गशस्त्रेण दृढेन छित्त्वा || **03** ||

हिन्दी अनुवाद:

इस संसार वृक्ष का जैसा स्वरूप कहा गया है, वैसा यहाँ विचार काल में नहीं मिलता; क्योंकि न तो इसका आदि (शुरुआत) है, न अंत है और न ही इसकी अच्छी तरह से स्थिति (प्रतिष्ठा) है। इसलिए इस वैराग्य रूपी दृढ शस्त्र द्वारा इस गहरी जड़ों वाले संसार रूपी वृक्ष को काटकर...

सरल व्याख्या:

यह संसार परिवर्तनशील है, इसका कोई निश्चित रूप नहीं दिखता। इसकी मोह-रूपी जड़ें बहुत गहरी जमी हुई हैं। भगवान कहते हैं कि इस मोह और बंधन को काटने का केवल एक ही अस्त्र है—'वैराग्य' या आसक्ति-रहित भाव। जब मनुष्य सांसारिक भोगों के प्रति अनासक्त हो जाता है, तभी वह इस विशाल भ्रम-जाल को काट पाता है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... सांसारिक मोह और बंधनों को केवल विवेकपूर्ण वैराग्य और अनासक्ति के शस्त्र से ही काटा जा सकता है।

श्लोक संख्या: **15.04**

> ततः पदं तत्परिमार्गितव्यं यस्मिंगता न निवर्तन्ति भूयः |
> तमेव चाद्यं पुरुषं प्रपद्ये यतः प्रवृत्तिः प्रसृता पुराणी || **04** ||

हिन्दी अनुवाद:

उसके पश्चात उस परम पद (परमात्मा) की खोज करनी चाहिए, जिसको प्राप्त होकर मनुष्य फिर लौटकर संसार में नहीं आते; और जिस परमेश्वर से यह पुरातन संसार-रचना का विस्तार हुआ है, उसी आदिपुरुष परमेश्वर की मैं शरण में हूँ—ऐसा निश्चय करना चाहिए।

सरल व्याख्या:

भगवान कहते हैं कि संसार-वृक्ष की मोह-रूपी जड़ों को काटने के बाद मनुष्य को उस परम सत्य की खोज में लगना चाहिए जहाँ पहुँचकर परम शांति मिलती है और पुनः दुःखों के संसार में नहीं आना पड़ता। इसके लिए साधक को उस परमात्मा के प्रति पूर्ण समर्पण का भाव रखना चाहिए जो इस पूरी सृष्टि का मूल कारण है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... सांसारिक मोह से मुक्ति पाने का अंतिम लक्ष्य परमात्मा की शरण में जाकर उस परम पद को प्राप्त करना है जो शाश्वत है।

Satyanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **15.05**

> निर्मानमोहा जितसङ्गदोषा अध्यात्मनित्या विनिवृत्तकामाः |
> द्वंद्वैर्विमुक्ताः सुखदुःखसंज्ञै र्गच्छन्त्यमूढाः पदमव्ययं तत् || **05** ||

हिन्दी अनुवाद:

जिनका मान और मोह नष्ट हो गया है, जिन्होंने आसक्ति रूप दोष को जीत लिया है, जो निरंतर अध्यात्म में स्थित रहते हैं, जिनकी कामनाएँ पूर्णतः नष्ट हो चुकी हैं और जो सुख-दुःख नामक द्वंद्वों से पूरी तरह मुक्त हैं—ऐसे ज्ञानी पुरुष उस अविनाशी परम पद को प्राप्त होते हैं।

सरल व्याख्या:

यहाँ उस परम पद को पाने की योग्यताएं बताई गई हैं। जिस व्यक्ति का अहंकार और अज्ञान मिट चुका है, जो सांसारिक आकर्षणों से मुक्त है, जिसका ध्यान सदा आत्म-चिंतन में रहता है और जो सुख-दुःख की अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थितियों में डिगता नहीं, वही उस अमर स्थिति को पा सकता है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... अहंकार, मोह और कामनाओं का त्याग करके ही मनुष्य जीवन की परम स्थिति और अखंड शांति को प्राप्त कर सकता है।

श्लोक संख्या: **15.06**

> न तद्भासयते सूर्यो न शशाङ्को न पावकः |
> यद्गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम || **06** ||

हिन्दी अनुवाद:

जिस परम पद को प्राप्त होकर मनुष्य लौटकर संसार में नहीं आते, उस मेरे परम धाम को न सूर्य प्रकाशित कर सकता है, न चंद्रमा और न अग्नि ही; वही मेरा परम धाम है।

सरल व्याख्या:

यह गीता के सबसे प्रसिद्ध श्लोकों में से एक है। भगवान अपने स्वरूप और परम धाम का वर्णन करते हैं। वे कहते हैं कि वह स्थिति भौतिक प्रकाश (सूर्य, चाँद या अग्नि) पर निर्भर नहीं है, बल्कि वह स्वयं परम प्रकाश स्वरूप है। वहाँ पहुँचने के बाद जीवात्मा का अज्ञान हमेशा के लिए मिट जाता है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... परमेश्वर का परम धाम स्वयं-प्रकाशित और चेतना का वह उच्चतम स्तर है जहाँ अज्ञान का अंधकार कभी पहुँच नहीं सकता।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **15.07**

> ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः |
> मनःषष्ठानीन्द्रियाणि प्रकृतिस्थानि कर्षति || **07** ||

हिन्दी अनुवाद:
इस देह में यह सनातन जीवात्मा मेरा ही अंश है; और वही प्रकृति में स्थित मन तथा पाँचों इन्द्रियों को आकर्षित करता (खींचता) है।

सरल व्याख्या:
श्रीकृष्ण कहते हैं कि हर जीव के भीतर जो चेतना है, वह मूलतः परमात्मा का ही सनातन अंश है। लेकिन जब यह जीवात्मा इस भौतिक संसार में आती है, तो वह प्रकृति से उत्पन्न मन और पाँचों इन्द्रियों (आँख, कान, नाक, जीभ, त्वचा) के साथ जुड़कर उनके बंधनों को ढोने लगती है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... हमारा वास्तविक स्वरूप ईश्वर का ही अंश है, किंतु मन और इन्द्रियों के प्रभाव में आकर हम अपने इस दिव्य स्वरूप को भूल जाते हैं।

श्लोक संख्या: **15.08**

> शरीरं यदवाप्नोति यच्चाप्युत्क्रामतीश्वरः |
> गृहीत्वैतानि संयाति वायुर्गन्धानिवाशयात् || **08** ||

हिन्दी अनुवाद:
बायु जैसे फूलों आदि के स्थान से गंध को ग्रहण करके ले जाती है, वैसे ही शरीर का स्वामी जीवात्मा भी जिस शरीर को त्यागता है और जिस नए शरीर को प्राप्त होता है, उसमें इन इन्द्रियों और मन को अपने साथ लेकर जाता है।

सरल व्याख्या:
जब मृत्यु होती है, तो केवल भौतिक शरीर नष्ट होता है। जीवात्मा जब एक शरीर को छोड़कर दूसरे शरीर में जाती है, तो वह अपने साथ मन, इन्द्रियों के सूक्ष्म संस्कारों और वासनाओं को भी ले जाती है। जैसे बहती हवा अपने साथ फूलों की सुगंध ले जाती है, ठीक वैसे ही चेतना अपने संस्कारों के साथ यात्रा करती है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... मृत्यु केवल शरीर की होती है; हमारे विचार, संस्कार और मन की वृत्तियां जीवात्मा के साथ अगले जीवन में भी यात्रा करती हैं।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **15.09**

> श्रोत्रं चक्षुः स्पर्शनं च रसनं घ्राणमेव च |
> अधिष्ठाय मनश्चायं विषयानुपसेवते || **09** ||

हिन्दी अनुवाद:
यह जीवात्मा कान, आँख, त्वचा, रसना (जीभ) और घ्राण (नाक) तथा मन का आश्रय लेकर ही विषयों का सेवन करती है।

सरल व्याख्या:
जीवात्मा इस शरीर में रहकर मन के माध्यम से इन पाँचों इन्द्रियों का उपयोग करती है और संसार के शब्द, रूप, स्पर्श, रस और गंध का आनंद या दुःख भोगती है। वास्तव में भोगने वाली इन्द्रियाँ नहीं, बल्कि उनके पीछे बैठी चेतना ही है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... शरीर और इन्द्रियाँ केवल साधन हैं; उनके पीछे स्थित चेतना ही संसार के सभी अनुभवों का मूल केंद्र है।

श्लोक संख्या: **15.10**

> उत्क्रामन्तं स्थितं वापि भुञ्जानं वा गुणान्वितम् |
> विमूढा नानुपश्यन्ति पश्यन्ति ज्ञानचक्षुषः || **10** ||

हिन्दी अनुवाद:
शरीर को छोड़कर जाते हुए को, शरीर में स्थित हुए को अथवा विषयों को भोगते हुए को तथा गुणों से युक्त हुए को भी अज्ञानी मनुष्य नहीं देख पाते; केवल ज्ञान रूपी नेत्रों वाले विवेकशील पुरुष ही तत्व से देखते हैं।

सरल व्याख्या:
भगवान कहते हैं कि यह जीवात्मा शरीर में कैसे रहती है, कैसे भोग भोगती है और कैसे शरीर छोड़कर चली जाती है—इस गूढ़ रहस्य को अज्ञानी लोग नहीं देख पाते क्योंकि वे केवल बाहरी भौतिक शरीर को देखते हैं। लेकिन जिनके पास ज्ञान और विवेक की दृष्टि है, वे इसके भीतर बैठी उस सूक्ष्म चेतना को स्पष्ट रूप से समझ पाते हैं।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... जीवन के सूक्ष्म आध्यात्मिक सत्यों को समझने के लिए केवल सांसारिक आँखें नहीं, बल्कि ज्ञान की दृष्टि आवश्यक है।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **15.11**

> यतन्तो योगिनश्चैनं पश्यन्त्यात्मन्यवस्थितम् |
> यतन्तोऽप्यकृतात्मानो नैनं पश्यन्त्यचेतसः || **11** ||

हिन्दी अनुवाद:
यत्न करने वाले योगी जन अपने हृदय में स्थित इस आत्मा को तत्व से देखते हैं; किंतु जिन्होंने अपने अंतःकरण को शुद्ध नहीं किया है ऐसे अज्ञानी मनुष्य यत्न करने पर भी इसको नहीं देख पाते।

सरल व्याख्या:
अपनी साधना में लगे हुए योगी अपने भीतर ही इस परम चेतना का अनुभव कर लेते हैं। लेकिन जिनका मन अशुद्ध है, जिनमें वासनाएं और अहंकार भरा हुआ है, वे यदि बाहर से केवल अभ्यास या बातें भी करें, तो भी वे इस आत्म-सत्य का दर्शन नहीं कर पाते। साधना के साथ अंतःकरण की शुद्धि अनिवार्य है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... आत्मज्ञान की प्राप्ति केवल कोरी कोशिशों से नहीं, बल्कि अंतःकरण और मन की पवित्रता से संभव होती है।

श्लोक संख्या: **15.12**

> यदादित्यगतं तेजो जगद्भासयतेऽखिलम् |
> यच्चन्द्रमसि यच्चाग्नौ तत्तेजो विद्धि मामकम् || **12** ||

हिन्दी अनुवाद:
सूर्य में स्थित जो तेज संपूर्ण जगत को प्रकाशित करता है, तथा जो तेज चंद्रमा में है और जो तेज अग्नि में है—उस तेज को तुम मेरा ही तेज समझो।

सरल व्याख्या:
श्रीकृष्ण संपूर्ण ब्रह्मांड की ऊर्जा का स्रोत स्वयं को बताते हैं। वे कहते हैं कि सूर्य की चमक और गर्मी, चंद्रमा की शीतलता और अग्नि की ताप-शक्ति—यह सब मेरी ही शक्ति का विस्तार है। प्रकृति की इन विशाल शक्तियों के पीछे मेरी ही परम चेतना कार्य कर रही है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... प्रकृति की समस्त ऊर्जा और प्रकाश का मूल स्रोत परमात्मा ही है; हमें हर प्राकृतिक शक्ति में ईश्वर की उपस्थिति का अनुभव करना चाहिए।

Satyanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **15.13**

> गामाविश्य च भूतानि धारयाम्यहमोजसा |
> पुष्णाणि चौषधीः सर्वाः सोमो भूत्वा रसात्मकः || **13** ||

हिन्दी अनुवाद:

और मैं ही पृथ्वी में प्रवेश करके अपनी शक्ति से सब प्राणियों को धारण करता हूँ और रसस्वरूप चंद्रमा होकर सम्पूर्ण औषधियों को (वनस्पतियों को) पुष्ट करता हूँ।

सरल व्याख्या:

भगवान समझाते हैं कि पृथ्वी में जो धारण करने की क्षमता (गुरुत्वाकर्षण और पोषण शक्ति) है, वह मेरी ही ऊर्जा है। वही ऊर्जा इस धरती पर जीव-जंतुओं और पेड़-पौधों को संभाले हुए है। साथ ही, चंद्रमा के रूप में रस और पोषण देकर सभी वनस्पतियों, अन्न और औषधियों को जीवन देने वाला तत्व भी मैं ही हूँ।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... हमारे जीवन और प्रकृति का संतुलन परमेश्वर की ही अव्यक्त शक्ति द्वारा निरंतर संचालित और पोषित हो रहा है।

श्लोक संख्या: **15.14**

> अहं वैश्वानरो भूत्वा प्राणिनां देहमाश्रितः |
> प्राणापानसमायुक्तः पचाम्यन्नं चतुर्विधम् || **14** ||

हिन्दी अनुवाद:

मैं ही सब प्राणियों के शरीर में स्थित रहने वाला वैश्वानर (जठराग्नि) होकर, प्राण और अपान वायु से संयुक्त होकर चार प्रकार के अन्न को पचाता हूँ।

सरल व्याख्या:

भगवान भोजन और पोषण का विज्ञान समझाते हैं। वे कहते हैं कि हमारे पेट में जो भोजन को पचाने वाली अग्नि (पाचन शक्ति) है, वह कोई भौतिक प्रक्रिया मात्र नहीं बल्कि स्वयं ईश्वर की शक्ति है। वह शक्ति प्राण और अपान वायु के संतुलन से हमारे द्वारा खाए गए चारों प्रकार के अन्न (चबाकर, चूसकर, चाटकर और पीकर खाए जाने वाले भोजन) को पचाकर शरीर को ऊर्जा देती है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... हमारा जीवन केवल भोजन करने से नहीं चलता, बल्कि उस भोजन को पचाकर शरीर का अंग बनाने वाली ईश्वर की आंतरिक शक्ति से चलता है।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **15.15**

> सर्वस्य चाहं हृदि सन्निविष्टो मत्तः स्मृतिर्ज्ञानमपोहनंच |
> वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यो वेदान्तकृद्वेदविदेव चाहम् || **15** ||

हिन्दी अनुवाद:

मैं ही सब प्राणियों के हृदय में अंतर्यामी रूप में स्थित हूँ; और मेरे से ही स्मृति, ज्ञान और अपोहन (संशय का निवारण या भूलना) होता है। सब वेदों द्वारा मैं ही जानने योग्य हूँ; तथा वेदान्त का कर्ता और वेदों को जानने वाला भी मैं ही हूँ।

सरल व्याख्या:

यह अध्यात्म का अत्यंत महत्वपूर्ण श्लोक है। श्रीकृष्ण कहते हैं कि हर जीव के हृदय में चेतना रूप से मैं विराजमान हूँ। हमारी याददाश्त (स्मृति), हमारी समझ (ज्ञान) और मन के भ्रम का मिटना—सब परमात्मा से ही संचालित होता है। दुनिया के समस्त शास्त्र और वेद अंततः उसी एक परमेश्वर को जानने का प्रयास करते हैं।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... हमारी बुद्धि और चेतना का मूल केंद्र परमात्मा है; शास्त्रों को पढ़ने का अंतिम ध्येय उसी अंतर्यामी ईश्वर का अनुभव करना है।

श्लोक संख्या: **15.16**

> द्वाविमौ पुरुषौ लोके क्षरश्चाक्षर एव च |
> क्षरः सर्वाणि भूतानि कूटस्थोऽक्षर उच्यते || **16** ||

हिन्दी अनुवाद:

इस संसार में दो प्रकार के पुरुष (तत्व) हैं—क्षर (नाशवान) और अक्षर (अविनाशी)। इनमें समस्त प्राणियों के शरीर तो 'क्षर' कहे जाते हैं और कूटस्थ जीवात्मा 'अक्षर' कहा जाता है।

सरल व्याख्या:

भगवान यहाँ जगत् की संरचना को दो भागों में बाँटते हैं। पहला है 'क्षर' यानी वह सब कुछ जो निरंतर बदल रहा है और एक दिन नष्ट हो जाएगा (हमारा यह भौतिक शरीर और दृश्य संसार)। दूसरा है 'अक्षर' यानी वह चेतना या आत्मा जो शरीर के बदलने पर भी कभी नष्ट नहीं होती और स्थिर रहती है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... यह संसार परिवर्तनशील शरीर (क्षर) और अचल आत्मा (अक्षर) का संगम है।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **15.17**

> उत्तमः पुरुषस्त्वन्यः परमात्मेत्युदाहृतः |
> यो लोकत्रयमाविश्य बिभर्त्यव्यय ईश्वरः || **17** ||

हिन्दी अनुवाद:

परंतु इन दोनों (क्षर और अक्षर) से उत्तम पुरुष तो अन्य ही है, जिसे 'परमात्मा' कहा गया है; जो तीनों लोकों में प्रवेश करके सबका भरण-पोषण करता है और जो अविनाशी ईश्वर है।

सरल व्याख्या:

'क्षर' (शरीर) और 'अक्षर' (जीवात्मा) से भी ऊपर एक तीसरा और सर्वोच्च तत्व है, जिसे 'उत्तम पुरुष' या 'परमात्मा' कहा जाता है। वह परमात्मा पूरी सृष्टि में व्याप्त होकर सबका पालन-पोषण करता है। वही पूरे ब्रह्मांड को अपनी सत्ता से संभाले हुए है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... परमात्मा शरीर और आत्मा दोनों का परम आधार है, जो संपूर्ण ब्रह्मांड का भरण-पोषण करने वाला परमेश्वर है।

श्लोक संख्या: **15.18**

> यस्मात्क्षरमतीतोऽहमक्षरादपि चोत्तमः |
> अतोऽस्मि लोके वेदे च प्रथितः पुरुषोत्तमः || **18** ||

हिन्दी अनुवाद:

चूँकि मैं नाशवान क्षर (शरीर) से सर्वथा परे हूँ और अविनाशी अक्षर (जीवात्मा) से भी उत्तम हूँ, इसलिए संसार में और वेदों में भी 'पुरुषोत्तम' नाम से प्रसिद्ध हूँ।

सरल व्याख्या:

भगवान इस अध्याय का रहस्य स्पष्ट करते हैं कि इस अध्याय का नाम 'पुरुषोत्तमयोग' क्यों है। क्योंकि श्रीकृष्ण क्षर (संसार) से परे हैं और अक्षर (जीव) से भी श्रेष्ठ हैं, इसीलिए वेदों और लोक-शास्त्रों में उन्हें 'पुरुषोत्तम' (पुरुषों में सर्वोत्तम/परम पुरुष) कहा गया है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... भगवान श्रीकृष्ण ही वह सर्वोच्च सत्ता हैं जो संसार और जीवात्मा दोनों से परे तथा परम पूज्य हैं।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **15.19**

> यो मामेवमसम्मूढो जानाति पुरुषोत्तमम् |
> स सर्वविद्भजति मां सर्वभावेन भारत || **19** ||

हिन्दी अनुवाद:

हे भारत! जो ज्ञानी मनुष्य इस प्रकार संशय-रहित होकर मुझे 'पुरुषोत्तम' जानता है, वह सर्वज्ञ (सब कुछ जानने वाला) हो जाता है और वह निरंतर सब प्रकार से मेरा ही भजन (चिंतन) करता है।

सरल व्याख्या:

भगवान कहते हैं कि जिस व्यक्ति के मन से यह भ्रम मिट जाता है और वह परमात्मा के इस 'पुरुषोत्तम' स्वरूप को गहराई से समझ लेता है, उसे फिर कुछ और जानना बाकी नहीं रहता। ऐसा व्यक्ति अपने मन, बुद्धि और कर्मों से पूरी तरह ईश्वर के प्रति समर्पित हो जाता है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... भगवान को संपूर्ण सृष्टि के स्वामी (पुरुषोत्तम) रूप में स्वीकार कर लेना ही ज्ञान की पूर्णता है।

श्लोक संख्या: **15.20**

> इति गुह्यतमं शास्त्रमिदमुक्तं मयानघ |
> एतद्बुद्ध्वा बुद्धिमान्स्यात्कृतकृत्यश्च भारत || **20** ||

हिन्दी अनुवाद:

हे निष्पाप अर्जुन! इस प्रकार यह अति गोपनीय (परम रहस्यमय) शास्त्र मेरे द्वारा कहा गया है। इसको तत्व से जानकर मनुष्य बुद्धिमान और कृतकृत्य (जिसका सब कर्तव्य पूरा हो गया हो) हो जाता है।

सरल व्याख्या:

यह इस अध्याय का अंतिम और उपसंहार श्लोक है। श्रीकृष्ण कहते हैं कि मैंने तुम्हें यह परम गोपनीय और श्रेष्ठ ज्ञान दे दिया है। जो मनुष्य इस सत्य को समझ लेता है, उसका जीवन सफल हो जाता है, उसकी बुद्धि शुद्ध हो जाती है और उसके जीवन के समस्त कर्तव्य पूर्ण हो जाते हैं।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... पुरुषोत्तम योग का ज्ञान प्राप्त कर लेने पर मनुष्य के जीवन का परम उद्देश्य सिद्ध हो जाता है और वह पूर्ण शांति को पाता है।

Satyaanubhuti Ashram

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे

पुरुषोत्तमयोगो नाम पञ्चदशोऽध्यायः || **15** ||

Satyaanubhuti Ashram